<u>बाड़मेर में थार महोत्सव – एक परिचय</u>

बाड़मेर के पुरातत्व, ऐतिहासिक, धार्मिक, दर्शनीय स्थलों के प्रचार–प्रसार करने, बाड़मेर की लोक कला एवं संस्कृति को अक्क्षुण बनाये रखने, हस्तशिल्प उद्योग का प्रचार–प्रसार करते हुए औद्योगिक स्तर में विकास करने एवं बाड़मेर को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर विशिष्ट स्थान प्रदान करने के उद्देश्य में जिला प्रशासन द्वारा पर्यटन विभाग के सहयोग में वर्ष 1986 से बाड़मेर थार समारोह का आयोजन प्रारम्भ किया गया था, फलस्वरूप बाड़मेर के अनेक लुप्त प्रायः पुरातत्वद्व धार्मिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं अन्य दर्शनीय स्थलों, लोककला, हस्तशिल्प एवं प्रकृति द्वारा निर्मित स्थलों का विकास प्रारम्भ हुआ।

तीन दिवसीय समारोह के दौरान पर्यटकों के लिए लोक–संगीत के कार्यक्रम, हस्तकलाओं का प्रदर्शन, श्रृंगारिक ऊँटों के करतब, मि. थार एवं क्वीन थार जैसी रोचक प्रतिस्पर्द्धाओं को शामिल किया जाता है।

बाड़मेर थार समारोह में जिला प्रशासन–पर्यटन विभाग के अतिरिक्त क्षेत्र की विभिन्न नगरपालिकाओं, समस्त राजकीय, अर्द्धशासकीय एवं निजी प्रतिष्ठानों के अलावा जनप्रतिनिधियों, पत्रकारों, स्वेच्छिक संगठनों, गणमान्य नागरिकों एवं लोक–कलाकारों, शिल्पकारों का अपेक्षित सहयोग प्राप्त कर आयोजन को सफल बनाने एवं विकास के उद्देश्यों को पूरा करने के प्रयास निरन्तर हैं। वर्तमान में बाड़मेर थार समारोह अपनी अलग पहचान बना रहा है।

आयोजन के प्रथम दिवस पर शोभा यात्रा में पारम्परिक वेशभूषा में लोक कलाकार, मंगल कलश लिए बालिकाएँ, श्रृंगारित ऊँट, राजस्थानी लोक–धुनों को बजाते हुए बैण्ड समूह, बैलगाड़ियों पर गायन वादन करते लोक कलाकार एवं मार्ग पर नृत्य प्रस्तुत करती नृत्यागंनाएँ जब शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरती है तो स्थान–स्थान पर स्वागतद्वारों में उनका उत्साह वर्धक स्वागत प्राप्त करती आदर्श स्टेडियम में पहुँचती है, जहाँ स्टेज पर मि.थार, थार क्वीन, साफा बांध, लम्बी मूँछ आदि रोचक प्रतिस्पर्धात्मक प्रतियोगिताएँ आयोजित होती है।

पुरातत्व महत्व के प्राचीन वैभवशाली ऐतिहासिक स्थल किराडू पर भजन संध्या से वीरान पेड़–मंदिरों में जीवन संवारती प्रतीत होती है।

तृतीय दिवस रेगिस्तान के जहाज ऊँटों द्वारा किए जाने वाले करतब एवं ऊँट की पीठ पर बैठकर रणबांकुरों द्वारा खेले जाने वाले खेल रोमाचंक होते है।

तीन दिवसीय समारोह में महाबार के रेतीले धोरों पर ऊँट संवारी का आनन्द एवं सांस्कृतिक संध्या में राजस्थानी लोकगीत, लोकनृत्य कार्यक्रमों से हजारों देशी दर्शक एवं विदेशी पर्यटक मंत्र–मुग्ध हो जाते है।